फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 160 अक्टूबर 2001

आत्महत्या नहीं बल्कि हत्या

34 महीनों की तनखायें नहीं दिये जाने से परेशान झालानी टूल्स मजदूर, भतौला निवासी श्री बाबू राम ने खुद को आग लगा कर जान दे दी। झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट ने एक और मजदूर की हत्या कर दी।

रचना घटना की, रचना शत्रु की

ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में सामान्य-जीवन बहुत-ही नीरस, उबाऊ और दर्दनाक होता है। सिर-माथों के पिरामिडों पर विराजमान लोग अपनी पीड़ा पर शानो-शौकत के लेप लगाते हैं। सीढी के निचले डँकों के लिये, दबाये-कुचले जाते लोगों के लिये विरोध-विद्रोह करना हर समय एक अनिवार्यता बना रहता है।

दबाये रखने, जकड़ बनाये रखने के लिये शस्त्र और शास्त्र सिर-माथों पर बैठने वालों के औजार हैं। युद्ध और किताब (वेद, बाइबल, कुरान, संविधान, मार्क्सवाद, अराजकतावाद) दलदल के दो छोर हैं। युद्ध और किताब, दोनों घटना हैं, महान घटना। साहित्यकार, कलाकार घटनाओं को तराश कर पहचान की राजनीति का आधार रखते हैं और दीर्घकाल के लिये शत्रुओं की रचना में योगदान देते हैं।

सिर-माथों पर बैठों के शस्त्र और योद्धा हमें लहुलुहान करते हैं। शास्त्र और ज्ञानी हमें खुद एक-दूसरे का खूनखराबा करने को उकसाते हैं। शास्त्रों का सार है : जो तुम्हारे सिर-माथों पर बैठे हैं, जो तुम्हारा दमन-शोषण कर रहे हैं वह यह सब तुम्हारे भले के लिये कर रहे-रही हैं।

ऊँच-नीच वाली वर्तमान समाज व्यवस्था में दमन-शोषण अब खुल कर संस्थागत-रूप में सामने आ गया है। व्यक्ति-विशेष की बजाय बिन-चेहरों वाली संस्थाओं से सामना है। तन-मन-विवेक की पीड़ा का स्रोत निराकार है, सामाजिक सम्बन्धों में है और मुक्ति नई समाज रचना में है : आड़ी-तिरछी राहों से यह अहसास बढ रहा है। लोगों के इस अहसास ने हर प्रकार की सरकार के सम्मुख मृत्यु को साकार कर दिया है। ऐसे में अपनी मौत को टालने के लिये सरकारों ने आतंकवाद को पाला-पोसा है, रचा है।

अमरीका में हुई घटना, अँग्रेजी मुहावरे में **दि घटना**, और उस पर सिर-माथों पर बैठों की प्रतिक्रियाओं को देखते हुये यह प्रश्न बेमानी हो गये हैं कि विनाश किया गया है अथवा करवाया गया है या फिर किया-करवाया गया है। रेडियो-टीवी-अखबारों-पत्रिकाओं के जरिये ज्ञानी प्रचारकों ने आतंकवाद के खौफ-शोहरत को विश्वव्यापी बना दिया है। खुद-ब-खुद आतंकवादी बनने और सरकारों द्वारा आतंकवादी बनाने की बम्पर फसल सामने है। लगता है कि दिवालिया सरकारों के खजाने फिलहाल यह फसल सुरक्षा-खतरों की दलीलों से भर देगी और आने वाले दिनों में दुनियाँ के हर हिस्से में सरकारी आतंक में बहुत भारी बढोतरी होगी। दि घटना के तत्काल बाद विमान कम्पनियों द्वारा एक लाख वरकरों की छँटनी : आतंकवाद को छतरी बना कर हमले करने की एक झलक है।

इन हालात में हम मार्च 1996 में प्रकाशित "नारद मुनि आतंकवादी घोषित" को यहाँ फिर से छाप रहे हैं। सिर-माथों पर बैठों के शस्त्रों को नाकारा करना और शास्त्रों को भोथरा करना दमन-शोषण के कारगर विरोध के लिये जरूरी है। ऐसी समाज रचना जहाँ दुभाँत नहीं हो, गैर-बराबरी नहीं हो उसको साकार करने के लिये भी शस्त्र-शास्त्र की काट आवश्यक है।

नारद मुनि आतंकवादी घोषित

(मार्च 1996)

घोटालों की खबरों से भरे पन्नों को चाटने में लोग लगे थे। बड़े अफसरों-बड़े नेताओं द्वारा हेरा-फेरियों में लापरवाही बरत कर सिस्टम के लिए खतरा पैदा करने पर सुप्रीम कोर्ट के विद्वान जजों की अपने बन्धुओं को डाँट-फटकार चर्चा में थी। इन मसालेदार पकवानों की मजदूरों का हाजमा गड़बड़ाने की क्षमता पर हम चिन्तन-मनन कर रहे थे। भटकाने-गुमराह करने और अर्थहीनता की मात्रा का हम हिसाब लगा रहे थे कि सूट-बूट में अप टू डेट एक सज्जन ने मजदूर लाइब्रेरी में प्रवेश किया। भौंचक्के से हम उन्हें कहाँ बैठायें के चक्कर में पड़े ही थे कि "नारायण! नारायण!" के उच्चारण ने हमें आश्चर्यचकित कर दिया। रमते जोगी को आदरपूर्वक आसन ग्रहण करवाते वक्त हमारी नजरों में उनके बदले भेष के प्रति जिज्ञासा मुखर थी।

मुनिश्री को सिगरेट जलाते देख हम और चौंके तो नारद जी धूँये के गोले छोड़ते हुए मुस्कुरा कर बोले, "बेटा, यह जैसा देश वैसा भेष का चक्कर नहीं है। बहुत-ही महत्वपूर्ण बातें मेरे अन्दर उमड़-घुमड़ रही हैं। एक इम्पोरटेन्ट मीटिंग बीच में ही छोड़ कर तुम से बात करने चला आया हूँ। मुझे बहुत कुछ कहना है — चाय-वाय से बीच में डिस्टर्ब नहीं करना।"

इस सरकार के राष्ट्रपति, फिर उस सरकार के प्रधानमन्त्री, फिर सरकारों के संघ यू एन ओ ने आतंकवाद को विश्व की प्रमुख समस्या घोषित किया तो देवराज इन्द्र का माथा ठनका और उन्होंने नारद जी को खोज-खबर के लिये पृथ्वी लोक भेजा।

मुनिश्री के निबार्ध स्वर गूँजते रहे, "बस-ट्रेन-प्लेन में बम, भीड़ भरे बाजारों में गोलीबारी, अपहरण-डकैती-हत्या, दँगे-फसाद में लाशों के अम्बार के आतंक ने पहले-पहल मुझे आतंकित कर दिया। ऐसी असुरक्षा, सिर पर हर वक्त मंडराती मौत के साये में मैं क्या तो खोज-खबर लूँगा और क्या रिपोर्ट देवराज इन्द्र को दूँगा? अनादिकाल से रमता यह जोगी इतना चिन्तित कभी नहीं हुआ था। जब मैंने इटली की राजधानी रोम में राष्ट्रपति को अपना परिचय-पत्र दिया उस वक्त आतंकवाद के भय से मेरा रोम-रोम काँप रहा था। मेरे घुटे सिर को ललचाई नजरों से देख कर गँजे राष्ट्रपति ने अपने सिर पर हाथ फेरा और निश्चिन्त से भाव से सिगार के कश लगाते हुये एक सिगार मेरी तरफ बढा दिया। इटली के राष्ट्रपति के हाव-भाव देख कर मेरा डर कुछ कम हुआ। मैंने भी सिगार जलाया और कश लेने से पहले ही उनसे बेसब्री से पूछ बैठा कि आतंकवाद से वे डरे हुये क्यों नहीं हैं।

रोम के विशाल महल में वह अदना-सा आदमी कुछ देर मन्द-मन्द मुस्कुराता रहा और फिर खुल कर हँसने के बाद बच्चों को समझाने के लहजे में मुझ से बात करने लगा।

इटली के राष्ट्रपति ने कहा, 'देव, आप हमारे पूज्य हैं पर बहुत भोले हैं। लोगों पर राज करने के लिये आप लोगों के साम-दाम-दण्ड-भेद के तरीके आज के लिहाज से इतने सरल हैं कि 100 में 100 नहीं तो 90 लोग तो उन्हें पलक झपकते ही समझ जायेंगे और वे नुकसानदायक मजाक बन जायेंगे। रोम की सरकारों का इतिहास बहुत पुराना है। नागरिकों को काम में जोते रखने और उन पर कन्ट्रोल बनाये रखने के लिये

(बाकी पेज दो पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

नारद मुनि आतंकवादी घोषित..... (पेज एक का शेष)

विद्वानों - ज्ञानियों ने यहाँ अनेकों ग्रन्थ रचे हैं और अन्य स्थानों की ऐसी पुस्तकों के अनुवाद किये हैं। शासन की सीढ़ी चढ़ने के लिये , अफसर-लीडर बनने और ऊँचे उठने के लिये मैकियावेली व कुटिल चाणक्य की पुस्तकें तो क- ख- ग की तरह हैं। साजिश और कत्ल में इटली के राजनेताओं से मुकाबला भला कौन कर सकता है ! बहुत महत्वपूर्ण होते हुये भी यह सब पुरानी बातें हैं परन्तु फिर भी देवलोक से आप जिस मकसद से आये हैं उसे सही ढँग से पूरा करने के लिये इनकी जानकारी आपको देना जरूरी था। खैर। शासन करने के दीर्घ अनुभवों से प्रशिक्षित और अफसर-लीडर बनने की अत्यन्त कड़ी प्रतियोगिता द्वारा सरकार में ऊँचे पदों पर बैठे लोगों को कत्ल व कुटिलता में अव्वल बनाने के बावजूद तीसेक वर्ष पहले हालात काबू से बाहर जाने लगे। लोग थे कि काबू में ही नहीं आ रहे थे। नेताओं- पार्टियों- संगठनों के जरिये आम लोगों को कन्ट्रोल में रखना फेल होने लगा था। इस या उस नेता अथवा पार्टी का ही विरोध करने की बजाय बढ़ती संख्या में लोग सरकार विरोधी बनते जा रहे थे। यह इतिहास में पहली बार हो रहा था कि बढती संख्या में आम लोग अपनी हर समस्या के लिये सरकारों को जिम्मेदार ठहराने लगे थे। आम लोग अपनी समस्याओं का समाधान सरकारों को मटियामेट करने में देखने लगे थे। कोई किसी पर शासन क्यों करे ? ऐसे सवाल , शासन और शासन व्यवस्था की बुनियाद को खतरे में डालते विचार और व्यवहार ने इटली में हमें ही नहीं बल्कि दुनियाँ- भर में सरकारों को हिला दिया था। उस समय मैं राष्ट्रपति का पी ए था। राष्ट्रपति के संग साये की तरह रहने की ड्युटी ने मुझे दुर्लभ अनुभव प्रदान किये। विभिन्न देशों के राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों से विचार- विमर्श , एक से बढ़ कर एक विद्वान से चर्चा , खुफिया संगठनों के शीर्ष अफसरों की मीटिंगों में गहन चर्चायें ...... और हर जगह भूत की तरह मंडराती रहती थी आम लोगों पर कन्ट्रोल पुनः स्थापित करने की समस्या। उस गहन मन्थन से निकला था आतंकवाद का यह रामबाण जिसके बारे में जानकारी लेने आप पधारे हैं। सब देशों के राजनेताओं , विद्वानों और सीक्रेट सर्विसेज चीफ्स में यह आम सहमति थी कि जहाँ तक उनकी नजरें जाती हैं , आम लोगों को कन्ट्रोल में रखने में दिक्कतें ही दिक्कतें हैं तथा वे बढती दिखती हैं। सरकारों के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है। ऐसे में यह सर्वोपरि महत्व का हो गया है कि आम लोगों को सरकार से भी बुरी कोई चीज नजर आये ताकि सरकारें उस भयंकर बुराई का मुकाबला करने के नाम पर आम लोगों के सरकार- विरोधी रुख को सरकार- समर्थक रुख में बदल सकें। आम लोगों को भयभीत करने और भयभीत रखने के लिये एक बेहद दुष्ट , क्रूर खतरनाक , अज्ञात , अदृश्य , धूर्त तथा शक्तिशाली शत्रु की आवश्यकता थी जिससे सरकारें ही आम लोगों को बचा सकती हैं। अतः उस शत्रु की हमने सृष्टि की और उसे पाल- पोस रहे हैं। और वह शत्रु है आतंकवाद ! कुछ समझे देवदूत ? मुझे इस बात का फख्र है कि इटली में इसका प्रयोग हमने अन्य सरकारों से पहले आरम्भ किया। इटली सरकार के एक खुफिया संगठन ने 12 दिसम्बर 1969 को पिआजा फोन्टाना में भीड़ के बीच बम विस्फोट कर 16 लोगों की हत्या के साथ आतंकवाद का वह उद्घाटन किया कि आतंकवाद के इस नये व भयंकर खतरे ने आम लोगों को सरकार का समर्थन करने को अक्सर मजबूर किया है। हमारे कुछ साहब लोग पिआजा फोन्टाना के कत्लेआम की हकीकत जान कर चीं- चुपर करने लगे तो हमने प्रधानमंत्री पद के एक दावेदार एल्डो मोरो का अपहरण कर महीनों रेडियो- टी वी- अखबार- पत्रिकाओं में मसालेदार खबरों के जरिये उनके होश ठिकाने लगाये और कटार को गहरी घोंपने के लिये फिर एल्डो मोरो की हत्या की। समस्यायें हैं , विकट हैं और बढ़ रही हैं पर फिर भी आतंकवाद के इस रामबाण ने इटली सरकार को ही नहीं बल्कि दुनियाँ- भर में सरकारों को बहुत राहत दी है। इससे ही हम ऐसे कानूनों के लिये समर्थन हासिल कर सके हैं जिनके तहत बिना मुकदमे चलाये बरसों लोगों को जेलों में बन्द रखा जा सकता है और आतंकवादी कह कर जिस किसी को मारा जा सकता है। हमारे 17 खुफिया संगठनों के मुखिया आपको डिटेल्स से वाकिफ करा देंगे।' "

इटली के राष्ट्रपति की बातें दोहरा कर नारद मुनि ने लम्बी साँस ली और फिर कुछ देर शान्त रहने के बाद बोले , " आतंकवाद को सर्वोपरि समस्या बनाने और प्रचारित करने का मामला राष्ट्रपति ने काफी कुछ स्पष्ट कर दिया था परन्तु फिर भी कई उलझनें थी जिन्हें मैंने इटली सरकार के गुप्तचर संगठनों के प्रमुखों के सामने रखा। अन्य देशों में कार्यरत आतंकवादी ग्रुपों से तालमेल और सहायता ही नहीं बल्कि अलग- अलग देशों की सरकारों द्वारा एक- दूसरे के खिलाफ आतंकवादी संगठन गठित और संचालित करने की बात सीक्रेट सर्विसों के चीफ्स ने स्वीकार की। भारत सरकार का खुफिया विभाग रॉ यह पाकिस्तान- चीन- श्रीलंका में करता है तो पाकिस्तान सरकार की आई एस आई भारत और अफगानिस्तान में। अमरीका सरकार की सी आई ए द्वारा यह हरकतें दुनियाँ- भर में जारी हैं तो सोवियत यूनियन रहने तक के जी बी भी विश्व- भर में यह करती थी। इजराइल सरकार की मोसाद का तो कहना ही क्या , स्वयं इटली सरकार के खुफिया संगठन फिलिस्तीनी पी एफ एल पी से घी- शक्कर हैं। सरकारों द्वारा एक- दूसरे के खिलाफ आतंकवाद संगठित व संचालित करने से दिक्कतें होती हैं पर दीर्घकाल से यह सब सरकारों की सामान्य गतिविधियों में है। इटली के खुफिया प्रमुखों ने बताया कि होड़ में अन्य सरकारों को कमजोर करने की यह कोशिशें बोनस रूप में सब सरकारों के गुप्तचरों को चुस्त व चौकस रखती हैं और समस्याओं की जिम्मेदारी अन्य सरकार पर डाल कर नागरिकों के "अपनी" सरकार के प्रति गुस्से को मोड़ने का काम भी करती हैं। भारत में हर समस्या की जिम्मेदार पहले अमरीका सरकार की गुप्तचर शाखा सी आई ए थी और अब पाकिस्तान सरकार की आई एस आई है। खुफिया प्रमुखों के इस सम्बन्ध में मैटर आफ फैक्ट , रुटीन, सामान्य क्रिया वाले रुख ने कई सवालों का बिना बूझे ही समाधान कर दिया और मैं लौटा सरकारों द्वारा अपने ही नागरिकों के खिलाफ आतंकवाद संगठित व संचालित करने के अजूबे पर।

इटली सरकार के खुफिया प्रमुखों ने मुझे बताया कि पहले- पहल हमारे एजेन्ट बस में या ट्रेन में अथवा भीड़- भाड़ वाली जगहों पर टाइम बम रख देते थे। विस्फोट- हत्याओं तथा अखबार- रेडियो- टी वी की सुर्खियों से आतंक अवश्य फैलता था और सरकार द्वारा चौकसी व सख्ती के पक्ष में माहौल बनता था परन्तु विस्फोट गुमनाम होते थे इसलिये इतने पर ही बात खत्म हो जाती थी। यह हमारे अनुभव की कमी के कारण हुआ। शीघ्र ही सीक्रेट सर्विसेज ने ऐसे नाम गढ लिये जिनके पर्चे विस्फोट स्थल पर छोड़े जाने लगे अथवा अखबारों को फोन करके जिम्मेदारी ली जाने लगी। अखबारों- पत्रिकाओं व रेडियो- टी वी पर इससे मिलते व दिलवाये जाते प्रचार ने पहले वाले कार्य तो किये ही , आतंकवादी संगठन साकार भी हो गये। प्रचार की वजह से कई भोले मिलिटेन्ट उन संगठनों की तरफ आकर्षित हुये और हमने उन्हें भर्ती कर लिया। आतंकवादी संगठन सीढीनुमा गुप्त संगठन होता है जिसमें फैसले ऊपर लिये जाते हैं और अमल नीचे वाले करते हैं। ऊपर वालों को नीचे वालों का पता होता है परन्तु नीचे वाले ऊपर वालों को नहीं जानते। ऐसे में अपने मन माफिक कार्य करवाना बहुत मजेदार खेल है। क्या- क्या नाम हमें अपने आतंकवादी संगठनों के लिये सोचने पड़े हैं – लाल आतंक , रैड ब्रिगेड , जाँबाज फोर्स , क्रान्तिकारी हथौड़ा , मुजाहिद मोहम्मद , त्रिशूल सेना , एन्जेल्स ऑफ टैरर , ब्लैक टाइगर , रैड लायन ....."

बोलते- बोलते नारद मुनि फिर चुप हो गये। हम उन्हें चाय के लिये टोकने वाले ही थे कि वे फिर शुरू हो गये , " राष्ट्रपति और खुफिया संगठनों के प्रमुखों की बातों में साजिश का पहलू छाया रहा था। इस पर मैंने उनसे उन ग्रुपों के बारे में पूछा जो खुद-बनते हैं और आतंक के जरिये सामाजिक समस्याओं के समाधान के सपने देख कर बहुत कष्ट उठाते हैं। मेरे यह कहने पर कि

(और बाकी पेज तीन पर)

नारद मुनि आतंकवादी घोषित...(पेज दो का शेष)

व लोग तो गुप्तचर संगठनों के एजेन्ट नहीं होते, सब चीफ हँस पड़े और फिर मुझे बच्चे की तरह समझाने लगे। यह सही है कि सामाजिक समस्याओं के कारण खुद-ब-खुद भी छोटे गुप्त आतंकवादी संगठन बनते हैं। परन्तु सरकार के गुप्तचर संगठनों से अपनी सुरक्षा के लिये यह बाध्य होते हैं अपने गोपनीय संगठन को सीढीनुमा रूप देने को – ऊपर वाले फैसले लेते हैं और नीचे वाले अमल करते हैं। इनमें भी ऊपर वाले नीचे वालों को जानते हैं पर नीचे वाले ऊपर वालों को नहीं जानते। सुरक्षा के लिये फौजी डिसीप्लिन और गोपनीयता की अनिवार्यता पर सिधान्त की चाशनी ऐसा ताना-बाना बुनती है कि ऊपर वाले सुरक्षित व स्वतन्त्र रहते हैं और नीचे वाले विवेक को गिरवी रख कर आदेशों का पालन करने को तत्पर रहते हैं। ऐसे संगठनों में घुसपैठ करना हम गुप्तचरों का कार्य है और खुफिया संगठनों के पास जो साधन हैं तथा कार्य करने की जो छूट है उसने हमारे लिये किसी भी ऐसे संगठन में घुसपैठ करना बहुत-ही आसान बना दिया है। घुसपैठ और फिर अन्दर से सूचनाओं के आधार पर चुन-चुन कर गिरफ्तारियों तथा 'मुठभेड़ों' में ठिकाने लगा कर हमारे एजेन्ट इन संगठनों के संचालकों में शामिल हो जाते हैं। हमारे साधनों की तुलना में जार के खुफिया संगठन ओखराना की कोई हैसियत नहीं थी फिर भी लेनिन के ग्रुप में महत्वपूर्ण स्थानों पर उसके एजेन्ट थे। आपकी वेष-भूषा थोड़ी बदल कर हम आपको आतंकवादी संगठन के मुखिया का अनुभव अभी करा देते हैं कह कर उन्होंने मेरा यह हुलिया बनाया। और पता है वे क्या बोले? वे बोले कि हम आपको आतंकवादी घोषित कर रहे हैं जिससे आप पृथ्वी पर सबसे सुरक्षित व्यक्तियों की कतार में आ जाओगे।"

इतना कह कर नारद मुनि ने चुप्पी साध ली। सरकारों द्वारा नीति के तौर पर आतंकवाद संगठित व संचालित करने की हकीकत हमारे सामने नाचने लगी। दक्षिण अमरीका के देशों में सरकारों के गुप्तचर संगठनों की कारगुजारियाँ; इंग्लैंड में बम धमाके; जापान में गैस अटैक; श्रीलंका में 25 साल से आतंकवाद-दर-आतंक; इजराइल में बम विस्फोट; मिश्र में गोलीबारी; पाकिस्तान में धू-धू जलता कराची; भारत में समय-समय पर हिन्दू-मुस्लिम दँगे-फसाद, 1967 के दौर में कलकत्ता में ट्रैफिक पुलिसवालों की हत्यायें, उत्तर पूर्व में उल्फा-बोडो-नागा-कूकी हिंसा, पँजाब में बसों में बम-चुन कर लोगों का कत्ल-काली बिल्लियाँ-कच्छा गिरोह-पुलिसवालों के परिवारों की हत्यायें, कश्मीर में सईद की बेटी का अपहरण-राज्यपाल के भाषणस्थल पर बम-जम्मू में बसों में बम विस्फोट-चुन कर गाँवों में अनजान लोगों द्वारा अन्धाधुन्ध फायरिंग-नित नये बनते आतंकवादी संगठन, दिल्ली में बसों में-ट्रेनों में-बाजारों में बमों के धमाके ..... इनमें से अधिकतर गुप्तचर संगठनों की हरकतें हैं। और, आतंकवाद को अधिक वास्तविकता देने के लिये, इसे शंका से परे करने तथा साथ ही शासक गुटों में मामले निपटाने के लिये कैनेडी-मुजीब-एल्डो मोरो-सादात-इन्दिरा-जिया उल हक-प्रेमदास-राजीव गाँधी-रूबिन की हत्यायें।

यह सब सोचते हुये हम सरकारों की आतंकवाद की पालिसी और गुप्तचर संगठनों द्वारा बम धमाकों, गोलीबारी, अपहरण, डकैती व हत्याओं द्वारा सरकारों की इस नीति पर अमल से मुकाबले के लिये नारद जी से गोपनीय बनाम खुलेपन पर उनके विचार जानना ही चाहते थे कि मुनिश्री अचानक उठे और शीघ्र ही फिर मिलने का वादा करते हुये मजदूर लाइब्रेरी से चले गये। (जानकारी हमने गिआंफ्रान्को सैंगुइनेरी की पुस्तक "ऑन टेरोरिज्म एन्ड दि स्टेट" से ली है।)

सुपर सील मजदूर : "अगस्त की तनखा आज 15 सितम्बर तक नहीं दी है – जुलाई का वेतन हमें 13 सितम्बर को जा कर दिया।"

सड़कें कत्लगाह हैं।

दर्पण

न्यू एलनबरी मजदूर : "जुलाई के वेतन में से कम्पनी ने 200 रुपये काट लिये थे। अगस्त की तनखा आज 13 सितम्बर तक नहीं दी है। लीडरों ने हाथ खड़े कर दिये हैं, कहते हैं कि हमारे बस का नहीं है।"

हिन्दुस्तान वायर वरकर : "कम्पनी क्लोजर की तरफ बढ रही है और साहबों ने लूट मचा रखी है। कैजुअलों व ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को निकालने के बाद पूर्ण निर्लज्जता से मैनेजमेन्ट ने 'जन्मतिथि-प्रमाण' के नाम पर 117 परमानेन्ट मजदूरों को नौकरी से निकाला। फिर कम्पनी ने 15 हजार रुपये से कम तनखा वाले 60-65 स्टाफ के लोगों को डेढ महीने की छुट्टी पर जबरन भेजा जबकि ज्यादा वेतन लेने वाले 20-25 साहबों ने फैक्ट्री में आना जारी रखा है। हम में से 40 लोगों से 4-5 मशीनें चलवाना जारी रख बाकी 290 को फैक्ट्री में खाली बैठाने लगे। मैनेजमेन्ट 24 या 25 अगस्त को श्रम अधिकारी को फैक्ट्री के दौरे पर लाई और उनके आगमन से पहले चल रही 4-5 मशीनों को बन्द करवा कर ढक दिया। मजदूरों ने श्रम अधिकारी को यह बात बताई पर मैडम ने 'फैक्ट्री में उत्पादन बन्द' लिखा। इधर साहबों ने मशीनें बेचनी शुरू कर दी हैं। झँझटों से बचने के लिये साहबों ने पहली सितम्बर से 290 मजदूरों की ले-ऑफ लगानी शुरू की हुई है, अगस्त की तनखा 20-25 तक खींचने की बजाय 11 सितम्बर को हमें दे दी, डेढ महीने की छुट्टी से लौटे स्टाफ को फिर डेढ महीने की छुट्टी पर भेज दिया है। कागजों में उत्पादन बन्द है पर आज, 12 सितम्बर को भी हिन्दुस्तान वायर में 40 मजदूर 4-5 मशीनें चला रहे हैं।"

इन्डीकेशन मजूदर : "स्टाफ में भी और वरकरों में भी कुछ लोग कम्पनी के चमचे हैं। आजकल चमचों को कम्पनी ने इस्तीफों के लिये माहौल बनाने में लगा रखा है। अलग ले जा कर चमचे कहते हैं कि अभी इस्तीफा लिख दोगे तो कुछ पैसे मिल जायेंगे, बाद में कम्पनी बिना कुछ दिये वैसे ही निकाल देगी। सुना है कि मैनेजमेन्ट ने चमचों को उनके आदमी भर्ती करने का लालच दिया है।"

कानून

लक्ष्मी डोर एण्ड वुड क्राफ्ट मजदूर : "8-9 साल से यह फैक्ट्री ऊँचा गाँव रोड़ पर आर्दश नगर, बल्लभगढ में चल रही है। अच्छा लाभ होने पर भी मैनेजिंग डायरेक्टर समय पर तनखा नहीं देता। ऐसे में नौकरी छोड़ो तो हिसाब नहीं देता। बस एक फिकरा है : पैसे नहीं हैं। खतरे का काम होते हुये भी ई.एस.आई. नहीं है। प्रोविडेन्ट फण्ड का प्रावधान नहीं है। हमें वार्षिक बोनस भी नहीं देते। हम ने श्रम विभाग में शिकायत डाली है। लेबर इन्सपैक्टर के यहाँ 25 सितम्बर की तारीख पड़ी है।"

सुपर स्विच वरकर : "अगस्त का वेतन आज 18 सितम्बर तक नहीं दिया है। बरसों से काम कर रहों को भी 1500 रुपये महीना तनखा देते हैं और प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं है। वार्षिक बोनस नहीं देते।"

कल्सी प्रिन्टमैक मजदूर : "डी-262 सैक्टर-24 में तीन महीनों से तनखा नहीं दी है – कहते हैं कि चेक नहीं आया है।"

कनवरटेड इंजिनियरिंग वरकर : "आज 18 सितम्बर तक हमें अगस्त की तनखा नहीं दी है। हम पैसे माँगते हैं तो साहब कहते हैं कि आगे से पैसे आयेंगे तब दे देंगे, कहीं भागे नहीं जा रहे। ई.एस.आई. के पैसे तनखा में से काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते।"

सुपिरियर रबड़ मजदूर : "डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को 1500-1600 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, फण्ड की पर्ची नहीं।"

नेशनल फार्मास्युटिकल वरकर : "अनाज गोदाम के पास स्थित इस दवाई फैक्ट्री में दस्तखत 1950 पर करवाते हैं पर देते 1750 के हिसाब से हैं। इन 1750 में से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काट कर हमारे हाथ में 1500 रुपये महीना ही तनखा के नाम पर देते हैं। कोई भी प्रश्न करने पर तत्काल निकाल देते हैं – यूँ भी जब चाहें निकाल देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

फर आटो मजदूर : "कैजुअलों और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को जुलाई की तनखा कम्पनी ने 6 सितम्बर को जा कर देनी शुरू की और आज 13 सितम्बर तक भी 10-15 वरकरों को जुलाई की तनखा नहीं दी है।"

अगड़म-बगड़म

●एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट के मजदूर 24 अगस्त से फैक्ट्री से बाहर हैं।

● एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक प्लान्ट के मजदूर 17 सितम्बर से फैक्ट्री से बाहर हैं।

●.......... ●......... ●..........

■एस्कोर्ट्स फर्स्ट प्लान्ट के शॉकर डिविजन तथा ट्रैक्टर डिविजन के मजदूर लगातार फैक्ट्री में जा रहे हैं। लेकिन ट्रैक्टर डिविजन मजदूरों की 24 अगस्त से कम्पनी हर रोज की पूरी तनखा काट रही है। ड्युटी पर उपस्थित होने के बावजूद पूरा वेतन काट लेने के लिये पिछली मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन एग्रीमेन्ट की धाराओं का हवाला कम्पनी दे रही है।

■लगातार ड्युटी पर उपस्थित रहने के बावजूद एस्कोर्ट्स सीएचडी प्लान्ट के मजदूरों का भी पूरा वेतन 24 अगस्त से कम्पनी काट रही है। यहाँ भी मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट की धाराओं को कम्पनी आधार बना रही है।

■मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट की किसी-न-किसी धारा का हवाला दे कर एस्कोर्ट्स कम्पनी ने इन दो-ढाई वर्ष में कई बार जुर्माने के तौर पर एक सौ रुपये प्रतिदिन के हिसाब से मजदूरों के वेतन में से काटे हैं।

■23 जुलाई से 13 अगस्त तक फैक्ट्री से बाहर बैठे एस्कोर्ट्स रेलवे इक्विपमेन्ट डिविजन के मजदूर मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते के बाद फैक्ट्री के अन्दर गये। मैनेजमेन्ट ने समझौता तोड़ दिया।

■लिखित में माफी माँगने पर एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक के एक सस्पैन्ड यूनियन लीडर को ड्युटी पर लेने का समझौता मैनेजमेन्ट ने यूनियन से किया। यूनियन लीडर द्वारा लिखित में माफी माँगने पर कम्पनी ने उसे नौकरी से बरखास्त कर दिया।

■श्रम विभाग में 24 सितम्बर को डी.एल.सी. के यहाँ त्रिपक्षीय वार्ता के लिये तारीख थी लेकिन डी.एल.सी. ही नहीं मिले, साहब उस दिन चण्डीगढ में।

मामला पिछली मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट का नहीं है। मामला उस एग्रीमेन्ट की धाराओं की गलत अथवा सही व्याख्या का नहीं है। मामला "इन को भी आजमा लें" का नहीं है। मामला "आर-पार" का भी नहीं है क्योंकि यह मजदूरी-प्रथा के खिलाफ नहीं है, वर्तमान समाज व्यवस्था के विरोध में नहीं है। मामला असल में यहाँ एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट (और संग ही संग यामाहा मैनेजमेन्ट) की बड़े पैमाने पर छँटनी करने की योजना का है। यह है इस अगड़म-बगड़म की जड़ में। मैनेजमेन्ट की छँटनी योजना से निपटने के लिये विचार में भी और व्यवहार में भी मन्थन जरूरी लगता है। आदान-प्रदानों द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में असल मामले की पहचान करना वास्तविक तात्कालिक हितों को पहचानना है और.... और हमारे तात्कालिक तथा दीर्घकालिक हित आपस में जुड़े हैं।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद-121001

डाल-पात

लखानी शूज मजदूर : "छुट्टी का फार्म भर कर हम अपनी ड्यु छुट्टियाँ माँगते हैं तो मैनेजमेन्ट छुट्टी मँजूर नहीं करती। बिना फार्म भरे कोई वरकर छुट्टी कर लेता है तब मैनेजमेन्ट उसकी अनुपस्थिति लगा देती है, कई दिन चक्कर कटवाने के बाद ड्युटी पर लेती है और तनखा काट लेती है। इस प्रकार हेरा-फेरी से हमारी कई ड्यु छुट्टियाँ कम्पनी खा जाती है। ऐसे में हमारे प्लान्ट में एक मजदूर ने छुट्टी के फार्म में कारण लिखा : 'कल मैं बीमार पड़ूँगा।' सुपरवाइजर पढ कर बौखलाया, मैनेजर पढ कर बौखलाया। वरकर शान्त रहा — मैनेजमेन्ट ने छुट्टी मँजूर कर दी।"

अमेटीप मशीन टूल्स वरकर : "अगस्त की तनखा नहीं दिये जाने पर फैक्ट्री में 14 सितम्बर को हम मजदूरों ने विरोध जताया तो कम्पनी ने हम में से 6 को सस्पेन्ड कर दिया। दो डायरेक्टरों की पिटाई का आरोप लगा कर 32 मजदूरों के खिलाफ पुलिस में शिकायत करने की धमकी मैनेजमेन्ट दे रही है। आज, 18 सितम्बर तक हमें अगस्त का वेतन नहीं दिया है।"

नोएडा में

नोएडा में निर्यात के लिये सिले-सिलाये कपड़े तैयार करने वाली फैक्ट्रियों में जिन हालात का मजदूरों को सामना करना पड़ रहा है उसकी एक झलक फ म स के अगस्त अंक में थी। चन्द महीनों में ही नोएडा स्थित कई फैक्ट्रियों में कार्य कर चुके दो सिलाई कारीगरों के अनुभव तब हम ने छापे थे। यहाँ हम अखबार 'जनसत्ता' में प्रकाशित सामग्री का इस्तेमाल कर रहे हैं।

गारमैक्स इण्डिया, 142, एन ई पी जैड, फेज II, नोएडा स्थित फैक्ट्री में कार्यरत स्त्री व पुरुष मजदूरों ने कानून की राह राहत हासिल करने के प्रयास शुरू किये। राहतें नहीं दिये जाने की स्थिति में कर्मचारी संघ ने 24 जुलाई से हड़ताल करने का नोटिस दिया। श्रम विभाग हरकत में आया और डी.एल.सी. नोएडा ने 18 जुलाई को मैनेजमेन्ट तथा कर्मचारी संघ के बीच समझौता वार्ता आरम्भ करवाई। अन्य कम्पनियों की ही तरह गारमैक्स इण्डिया भी कानून अनुसार शोषण करने के संग-संग कानून से परे शोषण भी करती है। ऐसे में कानून-वानून के फेर में पड़ कर मजदूरों को कुछ राहत देने से बचने के लिये गारमैक्स मैनेजमेन्ट ने वार्ता के अगले दिन, 19 जुलाई को फैक्ट्री में मजदूरों को छेड़ा-भड़काया। और फिर, कम्पनी ने 19 जुलाई को ही मजदूरों द्वारा गैरकानूनी हड़ताल करने, कम्पनी के अफसरों की पिटाई करने तथा फैक्ट्री में तोड़-फोड़ करने की रिपोर्ट पुलिस में दर्ज करवाई। रिपोर्ट में किसी भी स्त्री अथवा पुरुष मजदूर का नाम नहीं दिया ताकि पुलिस बारी-बारी से हर स्त्री/पुरुष मजदूर को आतंकित कर सके।

कम्पनी और पुलिस के आतंकवाद से महीने-भर में मजदूर काबू में नहीं आये। ऐसे में मैनेजमेन्ट ने 19 जुलाई की "घटना" के 41 दिन बाद, 30 अगस्त को 3 स्त्री तथा 12 पुरुष मजदूरों को एक साँझा आरोप-पत्र दिया जिसमें उन पर गैरकानूनी हड़ताल, अधिकारियों की पिटाई और तोड़-फोड़ के आरोप लगाये।

15 मजदूरों को नामजद करने से भी कम्पनी की पार नहीं पड़ी। गारमैक्स इण्डिया मजदूरों के संग **शाही एक्सपोर्ट** फैक्ट्री के मज़दूर भी जुड़ गये (शाही एक्सपोर्ट की एक फैक्ट्री फरीदाबाद में भी है)। और, यूनियन लीडरों ने प्रबन्धकों तथा प्रशासन को सूचना दी कि 21 सितम्बर को गेट मीटिंग करेंगे। टारगेट देख गारमैक्स कम्पनी हरकत में आई। 19 जुलाई की "घटना" बाबत 30 अगस्त दिनांकित आरोप-पत्र मैनेजमेन्ट ने 19 सितम्बर के 'जनसत्ता' में छपवाया और अन्य तैयारियाँ की। शुक्रवार, 21 सितम्बर को सुबह साढे सात बजे भाषण सुनने बैठे गारमैक्स इण्डिया तथा शाही एक्सपोर्ट के स्त्री-पुरुष मजदूरों पर टाटा 407 गाड़ी चढा दी और फिर मार-पीट की। पुलिस की देख-रेख में 25 स्त्री-पुरुष मजदूर घायल किये गये। उपेन्द्र, इदरीश, सुनीता, हीरा लाल और अम्बुज को दिल्ली लोकनायक अस्पताल भेजना पड़ा तथा 20 अन्य घायल मजदूरों को ई.एस.आई. अस्पताल नोएडा।

कम्पनी ने मजदूरों पर हमले को मनगढन्त कहानी बताया। थाने में पुलिस ने कम्पनी के गुण्डों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करने से इनकार कर दिया और उल्टे 12 मजदूरों के खिलाफ आरोप दर्ज किये। इस पर संयुक्त संघर्ष समिति की अगुवाई में सिटी मजिस्ट्रेट कार्यालय पर धरना, 10 मजदूर आमरण अनशन पर।

24 सितम्बर को दिल्ली अस्पताल में 25 वर्षीय मजदूर उपेन्द्र की मृत्यु हो गई और इदरीश मौत से जूझ रहा था। लाश को धरना-अनशन स्थल, सिटी मजिस्ट्रेट कार्यालय पर रखने की बात पर शहर के सभी थानों की पुलिस के अलावा देहात क्षेत्र से भी पुलिस मँगा ली गई। प्रान्तीय सशस्त्र पुलिस की एक टुकड़ी भी मँगा ली गई। एस पी सिटी, एस पी देहात तथा पुलिस उपाधीक्षक प्रथम, द्वितीय व देहात डी एस पी मौके पर तैनात। जिला प्रशासन, फैक्ट्री प्रबन्धकों और यूनियन लीडरों के बीच समझौते के लिये वार्तायें......... मृत मजदूर के परिजनों को डेढ लाख रुपये............

इन्जेक्टो वरकर : "जुलाई और अगस्त की तनखायें हमें आज 18 सितम्बर तक नहीं दी हैं। हमारे प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे कम्पनी द्वारा जमा नहीं करवाने की शिकायत करने के बाद भविष्य निधि अधिकारी हमारे फण्ड के 30 लाख रुपयों के लिये फैक्ट्री के चक्कर लगाने लगे हैं।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।